Vol.7 March 2014 No.9
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण

BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

ओ३म्-पुत्र की पहचान

-प्रियवीर हेमाइना

ओ३म्-पुत्रो, ओ३म्-पुत्र की ाान लिये जीना है।
चक्रवर्ती हम थे यह अभिमान लिये जीना है।।
भले प्रांत हों अलग-अलग
और भिन्न हों भाषाएँ
तो भी ओ३म्-चेतना के संग
रखना सम्मिलित आ ााएँ
आगे बढ़कर हमको अब उत्थान लिये जीना है।
चक्रवर्ती हम थे यह अभिमान लिये जीना है।।

निज वैदिक संस्कृति के संग
हमने रंग बिखेरे हैं
'तमसो मा ज्योतिर्गमय' से
हमने रचे सवेरे हैं
हम सबको नव-सजन का अरमान लिये जीना है।
चक्रवर्ती हम थे यह अभिमान लिये जीना है।।

ओ३म्-आज्ञा पर चलकर हमने
राम-कृष्ण-से पाये हैं
ओ३म्-पुत्र की श्रेणी में,
हमने नाम लिखाये हैं
कायरता अब नहीं विजय-अभियान लिये जीना है।
चक्रवर्ती हम थे यह अभिमान लिये जीना है।।

प चिम की प्रदूषित वायु
हम सबको है निगल रही
आर्य-सभ्यता धीरे-धीरे
क्षीण हो रही, पिघल रही
प्रखर चेतना पूरब का वरदान लिये जीना है।
चक्रवर्ती हम थे यह अभिमान लिये जीना है।।

वेदों की िक्षाएँ दिव्य
दयानन्द के सपनों को हम
ीघ्र यहाँ साकार करें
इण्डिया नहीं, आर्यावर्त का सम्मान लिये जीना है।
चक्रवर्ती हम थे यह अभिमान लिये जीना है।।
आर्यावर्त है आर्यों का

पर आर्यता खो गयी है-आज
भ्रष्टाचार अनाचार की
है छा गयी बुराई आज
करने हैं सब दुरित दूर, यह ज्ञान लिये जीना है।
चक्रवर्ती हम थे यह अभिमान लिये जीना है।।

318, विपिन गार्डन, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059
मो. 7503070674

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta
V.President
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Acharya Gyaneshwararya

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062

Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan March 2014 Vol. 7 No.9
फाल्गुन-चैत्र 2070 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. ओ३म्-पुत्र की पहचान 2
-प्रियवीर हेमाइना
2. संपादकीय 4
3. सांख्य द र्नि 7
-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
4. भारतीय नव संवत्सर (1 चैत्र ुक्ल विक्रमी) 8
-
5. महामना मदनमोहन मालवीय जी के जीवन के संस्मरण 10
6. सरदार पटेल की वहदाकार प्रतिमा स्थापना 12
-डॉ. भवानीलाल भारतीय
7. आज रंग हे माँ रंग है होली का 14
8. सुख-दुःख-एक सिक्के के दो पहलू 17
-उमा मोंगा
9. हिन्दुस्तान के विभाजन में गाँधी जी की भूमिका 20
-कन्हैयालाल एम. तलरेजा
10. वक्फ़ बोर्ड समाप्त करें 27
-प्रफुल्ल गोरडिया
11. Warrior Saint : Guru Gobind Singh
-Kulbir Kaur 28
12. 'Nehru-Patel were divided over sending army to J & K' 31
-L.K. Advani
13. SPICES : A VALUABLE ADDITION TO A HEART-HEALTHY DIET 33
14. Cinnamon and Honey-I 35

संपादकीय

सरकार की यथास्थिति बनाए रखने की नीति

सन् 1947 में दे ा आज़ाद हुआ और 1950 में डॉ. अम्बेडकर के सत्प्रयास से भारत के प्र ाासन के लिए संविधान का निर्माण हुआ। संविधान के निर्माण के बाद विभिन्न मामलों में परस्पर मतभेद और संविधान के प्रावधानों के विरुद्ध आन्दोलन होने पर मध्य मार्ग के रूप में उन्हें कुछ समय के लिए स्थगित रखने की व्यवस्था कर दी गई। उदाहरण के तौर पर अनुसूचित जातियों और जनजातियों तथा पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई ताकि इस अवधि में आरक्षण से मिलने वाले वि ोष अधिकारों का लाभ उठाकर वे मुख्यधारा में ाामिल हो सकें। ऐसे ही कुछ अन्य उदाहरण भी नीचे दिए गए हैं।

संविधान निर्माता डॉ. अम्बेडकर का विचार था कि सरकारी नौकरियों, संविधान सभाओं और ि ाक्षा संस्थाओं में अनुसूचित जातियों, जनजातियों और पिछड़े वर्गों को आरक्षण की सुविधा सीमित अवधि (दस वर्षों तक) ही दी जानी चाहिए। उनका कहना था कि जब तक आरक्षण रहेगा ये वर्ग अपने पाँव पर खड़े नहीं हो सकेंगे और न ही उनमें खड़ा होने का आत्मवि वास पैदा होगा। उनका यह भी कहना था कि हम इन्हें सदा के लिए सहारा लेकर चलने वाला अपंग नहीं बनाना चाहते। जब तक आरक्षण रहेगा, तब तक उनमें अपंग होने का भाव बना रहेगा। इसलिए वे चाहते थे कि दस वर्ष बाद आरक्षण समाप्त कर दिया जाना चाहिए। इस प्रकार डॉ. अम्बेडकर का दष्टिकोण तथाकथित राष्ट्रवादियों और अनुसूचित जातियों व जनजातियों के हितों के ठेकेदारों की अपेक्षा कहीं अधिक स्पष्ट, तर्कसंगत और राष्ट्रहित में था। हाल ही में जब काँग्रेस के एक नेता ने जाति के आधार पर आरक्षण समाप्त कर आर्थिक स्थिति के आधार पर आरक्षण की वकालत की तो सुश्री मायावती, पासवान और अन्य नेताओं ने वोट बैंक की राजनीति करते हुए इसका विरोध किया।

यही स्थिति जम्मू-क मीर में धारा 370 की है। इस धारा के

अनुसार जम्मू–क मीर को दे ा के अन्य राज्यों से वि ाष्ट दर्जा प्रदान किया गया है जिस पर न तो भारत का संविधान लागू होता है और न अन्य बहुत–से कानून। ोख अब्दुल्ला ने जब इस विषय में पं. नेहरु से संविधान में ऐसी धारा जोड़ने का आग्रह किया तो नेहरु ने ोख अब्दुल्ला को अम्बेडकर के पास भेज दिया। डॉ अम्बेडकर उस समय विधिमंत्री के साथ संविधान की ड्राफ्टिंग कमेटी के भी सदस्य थे। ोख ने उन्हें संविधान में जम्मू–क मीर को वि ोष दर्जा देने का आग्रह किया। इस पर डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि आप चाहते हैं कि भारत रियासत के लोगों को सस्ता अनाज दे, सड़कें बनाए, विकास के लिए धन लगाए, उसको सुरक्षा प्रदान करे, परन्तु जम्मू–क मीर पर उसका कोई अधिकार या नियन्त्रण न हो। उन्होंने ऐसा करने से साफ़ इन्कार कर दिया और कहा कि मैं भारत के हितों की बलि चढ़ाने को तैयार नहीं।

डॉ. अम्बेडकर के उत्तर से निरा ा होकर ोख साहब फिर पं. नेहरु के पास गए। पं. नेहरु में हिम्मत नहीं थी कि वे अम्बेडकर पर इस राष्ट्रहित विरोधी बात के लिए दबाव डालें। इसलिए उन्होंने यह काम गोपाल स्वामी आयंगर को सौंप दिया। आयंगर ने संविधान सभा में इस आ ाय की धारा 370 जोड़ने का प्रस्ताव रखा और आ वासन दिया कि यह धारा अस्थायी है और इसे ीघ्र ही समाप्त कर अन्य राज्यों के समान कर दिया जाएगा। यह धारा संविधान के जिस अनुच्छेद में रखी गई है उसका ीर्षक है "अस्थायी और बदली जानेवाली धाराएँ"। परन्तु आज भी धारा 370 बदस्तूर जारी है। इतना ही नहीं हाल ही में एक प्र न के उत्तर में क मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा था कि किसी में हिम्मत नहीं जो इसे हटाने की बात कर सके।

एक और उदाहरण राजभाषा हिंदी का है। संविधान के अनुसार संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी है। इस अनुच्छेद के खंड (2) में यह व्यवस्था की गई है कि संविधान के लागू होने के समय सन् 1950 से 15 वर्ष की अवधि तक अर्थात् सन् 1965 तक संघ के सभी कार्यों के लिए पहले की तरह अंग्रेजी का प्रयोग होता रहेगा। अनुच्छेद 343 (1) में संसद को यह अधिकार दिया गया है कि वह 1965 के बाद भी सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का प्रयोग

जारी रखने की व्यवस्था कर सकती है। राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग की व्यवस्था करते समय भारत सरकार ने इस बात को ध्यान में रखा कि हिन्दी धीरे-धीरे अंग्रेजी का स्थान इस प्रकार ले जिससे हिन्दीतर भाषा-भाषियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा प्र ाासन के काम में किसी प्रकार की बाधा न हो। अतः यद्यपि भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ तथापि हिन्दी का राजभाषा के रूप में सरकारी कार्यों के लिए पूर्णरूप से प्रयोग आज 63 वर्षों के बाद भी क्रियान्वित नहीं हो सका। आज भी सरकारी कार्यों के लिए हिन्दी का प्रयोग औपचारिकता मात्र है। सरकारी फाइलों में टिप्पणी और मसौदा लेखन (नोटिंग और ड्राफ्टिंग) अंग्रेजी में जारी है। कुछ विभागों में राजभाषा विभाग के आदे ाानुसार हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में भिजवाने की व्यवस्था अव य की गई है।

संविधान के अनुसार सन् 1965 तक अंग्रेजी को पूरी तरह से हट जाना था और सरकारी कामकाज में हिन्दी का ही प्रयोग होना था, परन्तु राजभाषा आयोग और संसदीय समिति दोनों ने ही राजभाषा अधिनियम 1963 द्वारा यह व्यवस्था की कि 26 जनवरी, 1965 के बाद भी संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए हिन्दी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता रहेगा। आज भी व्यवहार में अधिकां ा प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग बदस्तूर जारी है। घर की रानी हिन्दी नौकरानी बन गयी और विदे ाी भाषा अंग्रेजी आज भी महारानी बनकर राज कर रही है।

कहने का अभिप्राय यह है सरकार द्वारा विभिन्न वर्गों के दबाव के कारण जो व्यवस्थाएँ समझौते के रूप में अल्पकाल के लिए लागू की गई थीं उनमें यथास्थिति बनी हुई है। इससे दे ा में जो प्रगति और विकास होना चाहिए था। वह थम गया है। इससे यह प्रतीत होता है कि सत्तासीन दल कुछ वर्गों के तुष्टीकरण के लिए समुचित निर्णय न लेकर समस्याओं को अनि चित काल तक टालने का प्रयास करता है और उन्हें लटकाए रखता है। सरकार में यह साहस होना चाहिए कि वह दे ा के हित को ध्यान में रखकर उचित निर्णय ले, और उन्हें सख़्ती से लागू करे।

संपादक

सांख्य द ोन (अध्याय-1, सूत्र-75)

-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार

प्र न : यदि सूक्ष्म होने के कारण इन्द्रियों से प्रकृति की अनुपलब्धि (उसके अभाव को) सिद्ध नहीं करती तो प्रकृति का अस्तित्व तो किसी उपाय से सिद्ध होना चाहिए। इस विषय में सूत्रकार कहता है। सूत्र है-

कार्यद ोनात्तदुपलब्धेः।।75।।

अर्थ- (कार्यद ोनात्) प्रकृति के कार्य के देखे जाने से (तद् उपलब्धेः) उस (प्रकृति) का ज्ञान (अनुमान) हो जाने से उसका अभाव नहीं है।

भावार्थ- त्रिगुणात्मक प्रकृति की उपलब्धि (ज्ञान) उससे होने वाले कार्य को देखने से हो जाती है। हालाँकि मूलप्रकृति अतीन्द्रिय पदार्थ है, परन्तु यह सारा द यमान जड़ जगत् उसका कार्य है। यह जगत् त्रिगुणात्मक अर्थात् सत्व, रज और तम गुणों वाला है। इसमें होने वाले परिणाम को देखकर हम यह जान लेते हैं कि इसका कोई त्रिगुणात्मक मूल उपादान भी अव य होना चाहिए, क्योंकि कोई परिणामी तत्व अपने मूल उपादान के बिना नहीं हो सकता, यह नियम है। इस प्रकार त्रिगुणात्मक कार्य रूपी जगत् से उसके मूल उपादान त्रिगुणात्मक प्रकृति का अनुमान हो जाता है। अतः केवल दिखाई न देने से प्रकृति का अभाव नहीं माना जा सकता।।75।।

सी-2ए, 16/90 जनकपुरी,
नई दिल्ली-10058

Words of Wisdom

- What you cannot enforce, do not command.
- Success is the sum of small efforts, repeated day in and day out.
- Dreams are the touchstones of our character.
- He who has never learned to obey cannot be a good commander.
- To climb steep hills requires a slow pace at first.
- Try not to become a man of success but a man of value.
- Shoot for the moon, even if you miss, you'll land amongst the stars.
- It takes a person with a mission to succeed

भारतीय नव संवत्सर
(1 चैत्र ाुक्ल विक्रमी)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में विक्रमी सम्वत् तथा उसके अन्तर्गत पड़ने वाली तिथियों का वि ोष महत्त्व है। चाहे बच्चे का जन्म हो, नामकरण संस्कार हो, विद्यालय भेजने का अवसर हो, विवाह हो, गह प्रवे ा हो या किसी के राज सिंहासन पर बैठने की बात हो, ाुभ लग्न व मुहूर्त दिखवाते हैं। उनके अनुसार कोई भी कार्य यदि एक अच्छे मुहूर्त में प्रारम्भ हो तो उस काम की सफलता में चार चाँद लग जाते हैं। आखिर पंडित विद्वान लोग किस आधार और कैसे इस मुहूर्त को निकालते हैं। इस का आधार है प्राचीन व वैज्ञानिक कालगणना पद्धति। वि व में सौर मण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल तथा उनके सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं।

विक्रमी सम्वत् 2071 का ाुभ-आरंभ (31 मार्च से)

भारतीय संस्कृति श्रेष्ठता की उपासक है। जो प्रसंग समाज में हर्ष, उल्लास जगाते हुए सही दि ाा प्रदान करते हैं, उन्हें हम उत्सव के रूप में मनाते हैं।

अपने स्वाभिमान, राष्ट्रप्रेम को जगाने वाला ऐसा ही प्रसंग आता है चैत्र मास के ाुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को, जिस दिन से भारतीय नववर्ष प्रारम्भ होता है। आइये, इस दिन की महानता के प्रसंगों को देखते हैं-

ऐतिहासिक महत्त्व

1. यह दिन अपनी काल गणना का प्रथम दिन अर्थात् सष्टि रचना का पहला दिन है। आज से एक अरब, सत्तानवें करोड़ उनतीस लाख, उन्चास हजार, एक सौ बारह (1,97,29,49,112) वर्ष पूर्व इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्मा जी ने जगत की रचना की।
2. **विक्रमी सम्वत् का पहला दिनः** विक्रमादित्य के नाम पर सम्वत् प्रारम्भ होता है जिसके राज्य में न कोई चोर था, न अपराधी थे, न भिखारी थे और इसी दिन सम्राट् विक्रमादित्य ने 2070 वर्ष पहले ऐसा राज्य स्थापित किया था।
3. **प्रभु राम ने भी यही दिन लंका विजय** के उपरांत अयोध्या आने के बाद राज्याभिषेक के लिये चुना था अर्थात् प्रभु राम का राज्याभिषेक का भी यही दिन था।
4. नवरात्र स्थापना ाक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात्, नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है। प्रभु राम के जन्म दिन रामनवमी से पूर्व नौ दिन उत्सव मनाने का प्रथम दिन।
5. **आर्यसमाज स्थापना दिवस** - समाज को श्रेष्ठ (आर्य) मार्ग पर ले जाने हेतु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसी दिन को आर्यसमाज स्थापना दिवस के रूप में चुना। ऋषिवर ने 10

अप्रैल 1875 को आर्यसमाज की स्थापना करके, मानवमात्र के उपकारार्थ जो किया वह सदा-सदा याद किया जायेगा। वे दे ावासियों को वि ुद्ध वैदिक धर्म में दीक्षित कर, आत्मज्ञान से उज्ज्वल और पवित्र कर देना चाहते थे। उन्होंने वेद के उदाहरण देकर सिद्ध कर दिया कि स्त्रियों की ि ाक्षा, अध्ययन आदि वेद विहित है उन्होंने दलितों को समान अधिकार दिलाया, भटके हुओं को सही रास्ता दिखाया, ब्रह्मचर्यपालन की महिमा का वर्णन किया। उन्होंने भारतीय प्राचीन संस्कृति को नवजीवन प्रदान किया।

स्वामी जी महाराज भारत को राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से एक सूत्र में बाँधना चाहते थे। आज आर्यसमाज का स्थापना दिवस सम्पूर्ण वि व में मनाया जा रहा है। उस युगदष्टा ऋषि को हमारी प्रणामांजलि।

6. **गुरु अंगद देव प्रगटोत्सव** : यह सिक्ख परम्परा में उनके द्वितीय गुरू अंगददेव का जन्मदिवस है।

7. **सन्त झूलेलाल जन्मदिवस** : सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक सन्त झूलेलाल का भी यह जन्म दिवस है।

8. **ाालिवाहन जन्म दिवस** : विक्रमादित्य की भाँति ाालिवाहन ने हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना।

9. **युगाब्द सम्वत्सर का प्रथम दिन** :5115 वर्ष पूर्व युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।

10. **डॉ. के ावराव बलीराम हैडगेवार का जन्म दिवस** भी इसी दिन है। जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक थे।

प्राकृतिक महत्व

1. **वसंत ऋतु से सम्बन्ध** : वसन्त ऋतु यानि उल्लास, उमंग, खु ाी का समय। जब चारों तरफ सरसों के पीले फूल लहरा रहे होते हैं, पुष्पों की सुगंधि व्याप्त होती है और मंद समीर बहती है।

2. **फसल पकने का प्रारम्भ** : किसान की मेहनत का फल। एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग नहीं जुड़ा है, जिससे राष्ट्रप्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव पैदा हो सके?

आज दे ा करवट ले रहा है। सदियों की निद्रा दूर कर भारत अँगड़ाई ले रहा है। इस दे ा की संस्कृति के मूल तत्व "एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति" यानि सत्य, ई वर एक है उसे लोग भिन्न-भिन्न नामों से जानते हैं। हम सब साथ-साथ चलें और एक दूसरे से सहयोग करते चलें तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपने राष्ट्र की पताका दुनिया भर में सबसे ऊँची फहराएँगे। नव संवत्सर की महत्ता से जन-जन को अवगत कराएँ। अगले वर्ष और अधिक उत्साह से यह पर्व मनाएँ।

महामना मदनमोहन मालवीय जी के जीवन के संस्मरण

सहयोग की भावना

महामना मदनमोहन मालवीय को का ी हिन्दू वि वविद्यालय के निर्माण कार्य हेतु धन की आव यकता थी, इसलिए वह समाज के संपन्न लोगों से मिलकर उनसे उस सत्कार्य के सहयोग की प्रार्थना करते थे। मालवीय जी के एक मित्र उन्हें इसके लिए एक बड़े व्यापारी के घर ले गए। आवाज़ देने पर सेठ जी ने बैठक का दरवाजा खोला और दोनों अतिथियों को बैठाया। उस वक्त ााम हो जाने के कारण अंधेरा छाने लगा थाा। बैठक में बिजली नहीं थी, इसलिए सेठ जी ने अपने छोटे पुत्र को लालटेन जलाने को कहा। पुत्र लालटेन और दियासलाई लेकर आया। उसने माचिस की एक तीली जलाई, परंतु लालटेन तक आते-आते बुझ गई। इस तरह उसने तीन तीलियाँ बर्बाद कर दीं। इस पर सेठ जी ने लड़के से नाराज़ होकर कहा, 'तुमने माचिस की तीन तीलियाँ बर्बाद कर दीं, कितने लापरवाह हो।' यह कहकर सेठ जी जब अंदर गए तो मालवीय जी ने अपने मित्र की ओर देखा, मानो कह रहे हों कि इस सेठ से कुछ पाने की आ ाा मत करो क्योंकि यह तो इतना कंजूस है कि माचिस की तीन तीलियाँ नष्ट हो जाने पर लड़के को डाँट रहा था। संकेत में मित्र ने मालवीय जी से सहमति जताई और दोनों बैठक से बाहर निकले। इतने में सेठ जी आ गए। वह चकित होकर बोले, 'अरे! आप चल क्यों दिए? बैठिए, काम तो बताइए।' मालवीय जी के मित्र ने आने का प्रयोजन बताया। सेठ जी ने पच्चीस हजार रुपये निकालकर रख दिए। मालवीय जी ने सेठ जी से कहा, 'अभी आपने लड़के को माचिस की तीलियाँ नष्ट होने की वजह से डाँटा, जबकि उनका मूल्य नहीं के बराबर है। लेकिन हमें आपने तुरंत पच्चीस हजार रुपये दे दिए।' सेठ जी हँसकर बोले, 'लापरवाही से छोटी से छोटी वस्तु को भी नष्ट नहीं करना चाहिए। लेकिन किसी ाुभ कार्य में हजारों रुपये सहर्ष दे देने चाहिए। दोनों बातें अपनी जगह ठीक हैं। इनमें कोई विरोध नहीं।'

सबसे सही उपाधि

एक दिन कलकत्ता वि वविद्यालय के वाइस चांसलर का एक पत्र पाकर पंडित मदन मोहन मालवीय जी असमंजस में पड़ गए। वह बुदबुदाए-अजीब प्रस्ताव रखा है उन्होंने। क्या कहूँ, क्या लिखूँ? उनके पास बैठे एक सज्जन ने पूछा-पंडित जी, ऐसी क्या अजीब बात लिखी है उन्होंने। मालवीय जी ने पत्र उठाया और उसे पढ़कर सुनाने लगे- कलकत्ता यूनिवर्सिटी आपको डॉक्टरेट की सम्मानित उपाधि से अलंकृत करके अपने आपको गौरवान्वित करना चाहती है। आप अपनी बे ाकीमती स्वीकृति से ाीघ्र ही सूचित करने की कृपा कीजिए। पास बैठे सज्जन ने कहा- आप इन्कार न करें। यह तो, हम वाराणसीवासियों के लिए वि ोष गौरव की बात होगी। मालवीय जी ने उस समय कुछ नहीं कहा। अगले

दिन उन्होंने उस पत्र का उत्तर लिखा – महोदय, आपके प्रस्ताव के लिए धन्यवाद। मेरे इस उत्तर को अपने प्रस्ताव का अनादर मत मानिएगा। मेरा पक्ष सुनकर आप उस पर पुनर्विचार कीजिएगा। कृपया मेरी भावना का आदर करते मुझे डॉक्टर बनाने का विचार त्याग कर "पंडित" ही बना रहने दीजिए। मालवीय जी के लिए यही दुविधा आगे चलकर एक बार फिर पैदा हुई। वद्धास्वस्था में जब मालवीय जी तत्कालीन वाइसराय की कौंसिल के वरिष्ठ काउंसलर थे, तब एक कार्यक्रम के दौरान वाइसराय ने कहा– पंडित जी, ब्रिटि ा सरकार आपको "सर" की उपाधि से अलंकृत करना चाहती है। मालवीय जी ने तुरंत मुस्कुराकर वही पुराना जवाब दिया– मैं अपनी सनातन उपाधि नहीं त्यागना चाहता। मेरे लिए "पंडित" उपाधि ही सही है। यह वर्षों से चली आ रही है और मैं इससे संतुष्ट हूँ।

निजाम का दान

उन दिनों की बात है जब महामना पंडित मदन मोहन मालवीय का ाी हिन्दू वि वविद्यालय की स्थापना के लिए चंदा इकट्ठा कर रहे थे। वे चाहते थे कि समर्थ लोग खास तौर से मदद करें। इसलिए वे सेठों और राजा–महाराजाओं से भी संपर्क कर रहे थे। इसी सिलसिले में वे हैदराबाद के निजाम के पास भी पहुँचे। पर निजाम ने मदद देने से साफ इंकार कर दिया। पर मालवीय जी भी इतनी जल्दी हार मानने वाले नहीं थे। वह सही मौके की ताक में थे। वे वहीं डटे रहे। संयोग से उन्हीं दिनों वहाँ एक वद्ध सेठ का निधन हो गया। सज–धज के साथ उसकी ावयात्रा निकली। ावयात्रा में उसके घर वाले पैसों की बारि ा करने हुए चल रहे थे। मालवीय जी के दिमाग में एक नायाब विचार आया। वह भी उस ावयात्रा में ाामिल हो गए। यही नहीं, वह पैसे भी उठाने लगे। उन्हें ऐसा करते देख कर साथ चल रहे लोगों को बड़ा ताज्जुब हुआ। वहाँ के उनके एक मित्र ने उनसे आखिरकार पूछ ही लिया– ये आप क्या कर रहे हैं? लोग क्या कहेंगे? मालवीय जी झट से बोले– भाई! क्या करूँ, तुम्हारे निजाम ने कुछ भी देने से इंकार कर दिया। मुझे तो अब खाली हाथ ही बनारस लौटना होगा। अगर किसी ने पूछ लिया कि भाई कितना लेकर आए हो, तो मैं क्या जवाब दूँगा। यह कहने में अच्छा तो लगेगा नहीं कि मैं खाली हाथ ही आया हूँ। लोग हैदराबाद के बारे में न जाने क्या छवि अपने मन में बना लें। इसलिए मैं यह सोच रहा हूँ कि इस तरह से कुछ पैसे जमा कर लूँ ताकि लोगों को बता सकूँ कि हैदराबाद से यह रा ि मिली है। यह बात किसी तरह फैलते–फैलते निजाम तक जा पहुँची। इससे निजाम बड़ा लज्जित हुआ। फिर खुद आकर उसने मालवीय जी से माफी माँगी और वि वविद्यालय के लिए दिल खोलकर दान दिया।

बहदाकार प्रतिमा स्थापना समारोह
सरदार पटेल की नीतिमत्ता तथा उनका हास्यबोध

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

दे ा के स्वतंत्र होने पर प्रधानमंत्री का दायित्व कौन सँभाले, इस जटिल प्र न के समाधान के लिए काँग्रेस के बहुमत ने सरदार वल्लभभाई पटेल के पक्ष में अपना मत दिया। परन्तु महात्मा गाँधी का व्यक्तिगत झुकाव पं. जवाहरलाल नेहरु की ओर था। गाँधीजी के आगे कांग्रेस नतमस्तक हुई और 15 अगस्त 1947 को पं. नेहरु ने इस दायित्व को सँभाला। सरदार पटेल गाँधीजी के कट्टर अनुयायी थे। उन्हें महात्माजी की आज्ञा सर्वोपरि जान पड़ी और उन्होंने दे ा के गहमंत्री तथा उपप्रधानमंत्री के पदों को सहर्ष स्वीकार किया। आगे 1950 तक के अपने संक्षिप्त कार्यकाल में उन्होंने पाँच सौ से अधिक दे ाी रियासतों को भारत संघ में मिला कर दे ा के एकीकरण का जो लाघनीय प्रयास किया वह उनकी राजनैतिक चातुरी तथा नीतिमत्ता का परिचायक है।

महात्माजी द्वारा प्रतिपादित सत्य और अहिंसा के उसूलों में सरदार की आस्था किसी अन्य गाँधीवादी से कम नहीं थी तथापि वे राजनैतिक प्र नों को यथार्थवादी दष्टि से देखते थे। बात तब की है जब मंत्रिमंडल की एक बैठक में कोरिया के गहयुद्ध पर चर्चा चल रही थी। टोकियो स्थित भारतीय दूतावास के प्रमुख अधिकारी के.के.चेट्टियार ने भारत सरकार को एक पत्र भेजा था जिसमें कोरिया के युद्ध और वहाँ हुई अंधाधुंध बमबारी से हुए भयंकर विना ा का सजीव चित्रण किया गया था। नेहरु जी ने जब यह पत्र पढ़ा और वहाँ के निवासियों की दुर्द ाा का जीवन्त वर्णन पढ़कर पण्डितजी भावाभिभूत हो गये और करुणा से पिघल गये। परन्तु सरदार अविचलित रहे। पत्र वाचन जब समाप्त हुआ तो सरदार पटेल ने आहिस्ता से पूछा- यह पत्र किसने लिखा है? क्या लिखने वाला कोई जैन है? सरदार के कथन में छिपी भावना यह थी कि युद्ध तो विना ा का ही प्रतीक है। उससे यदि करुणा जागत होती है तो वह जैन मत की अहिंसा का ही परिचायक है

मंत्रिमण्डल की एक अन्य बैठक में पुर्तगीज अधिकृत गोवा की स्थिति पर विचार हो रहा था। यह 1950 की बात है। चर्चा का विषय था कि क्या गोवा को पुर्तगाली अधीनता से तुरन्त

मुक्त करा लिया जाए। राजगोपालाचार्य पुर्तगाल के खिलाफ बल प्रयोग करने के पक्ष में नहीं थे। उनका सुझाव था कि हमें गोवा के वर्तमान ाासकों के साथ बातचीत कर कोई समाधान निकाल लेना चाहिए। दो घण्टे तक विचार-विम ा चलता रहा। सरदार पटेल इस दौरान अन्यमनस्क से दिखाई दिये मानों उन्हें इस बहस से कोई मतलब ही नहीं है। बहुत देर तक वे आँखें बंद किये बैठे रहे, लगा जैसे ऊँघ रहे हों। सहसा तन्द्रा त्याग कर बोल उठे- क्या चलें विजय प्राप्त करने को, सिर्फ दो घण्टे का काम है। परन्तु नेहरु जी को सरदार का सुझाव स्वीकार नहीं हुआ। नतीजा इतिहास बताता है। गोवा को सैनिक कार्यवाही से भारत में मिलाने का कार्य सरदार के जीवन काल में नहीं किया जा सका। वह 1961 में खुद नेहरु के ाासन काल में ही करना पड़ा और गोवा से पुर्तगाली सेना को जाना पड़ा।

सरदार की रण चतुरी हैदराबाद (निजाम) को भारत में मिलाने के समय दीख पड़ी। यह उनकी कूटनीतिज्ञता का परिणाम था कि मात्र बारह घण्टों में पुलिस कार्यवाही के नाम से हैदराबाद राज्य को निजाम के अत्याचारों से मुक्त करा लिया गया और लालकिले पर आसिफजाही झण्डा फहराने का ख्वाब देखने वाले मीर उस्मान अली को संधि का पैगाम भेजना पड़ा और सरदार के आगमन पर खुद निजाम भारत के गहमंत्री पटेल के स्वागत के लिए करबद्ध होकर हवाई अड्डे पर आया। उस समय निजाम के चेहरे पर जो बेचारगी बरस रही थी वह देखने लायक थी। उस समय के हैदराबाद के प्रधानमंत्री मीर लियाकत अली और मतान्ध कासिम रिज़वी (रजाकारों की सेना का स्वंयभू सेनापति) क्रान्ति की उस आँधी में ता ा के पत्तों की तरह उड़ते दिखाई पड़े।

किन्तु जब क मीर को पाकिस्तानी आक्रान्ताओं से मुक्त कराने का प्र न आया तो सरदार लाचार दिखाई दिये। इसलिए कि क मीर तो नेहरु जी की ससुराल थी, भला वहाँ उनकी मर्जी के बिना किसी की क्या चल सकती थी? पं. नेहरु की इसी हिमालय भूल का नतीजा हम आज पैंसठ वर्ष बीत जाने पर भी भोग रहे हैं। का ा! सरदार की राय को मान लिया जाता तो सारे क मीर को आततायियों से मुक्त कराना कठिन नहीं था।

3/5, ंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

आज रंग है, हे माँ रंग है होली का
(भारत से लेकर फिनलैंड और पेरू तक दुनिया भर में फैली हैं होली-होलिका की परंपराएँ)

भारत में बंगाल में होली से एक दिन पहले ढोल उत्सव होता है जिसमें महिलाएँ बसन्ती रंग की साड़ी पहन कर नाचती हैं। (अलीराजपुर और झाबुआ में राग-रंग का भगोरीया उत्सव होली से एक सप्ताह पूर्व होता है।)

धुर उत्तरी यूरोप का दे ा फिनलैंड हवाई नक ो पर भारत से करीब सात हजार किलोमीटर दूर है, हालाँकि दोनों दे ों के बीच कोई सीधी फ्लाइट न होने के कारण दिल्ली से हेलसिंकी पहुँचने के घंटों का हिसाब लगाना मु किल है। सफर के लिहाज से और भी बुरा हाल दक्षिणी अमेरिकी दे ा पेरू का है। मुंबई से लीमा पहुँचने के लिए 17 हजार किलोमीटर का सफर तय करना पड़ेगा, लेकिन इन दोनों ाहरों के बीच भी कोई सीधी उड़ान नहीं है। खुद पेरू और फिनलैंड एक दूसरे से लगभग 12 हजार किलोमीटर दूर हैं। विरल आबादी वाले इन दे ों के बीच आवाजाही बहुत ही कम है। लेकिन यह कैसा संयोग है कि फरवरी, मार्च और अप्रैल में इन तीनों दे ों में एक-दूसरे से बहुत मिलते-जुलते रिवाज़ देखने को मिलते हैं। स्वीडन और फिनलैंड में मनाई जाने वाली वालपर्जिस नाइट भारत के होलिका दहन की याद दिलाती है। और तो और, दोनों जगह इन त्यौहारों का माहात्म्य भी एक जैसा है। सारी बुराइयाँ, सारी बीमारियाँ इधर होलिका और उधर वालपर्जिस की आग में जलाकर खाक़ कर दी जाती हैं। इससे आगे नया साल, नई जिंदगी। फर्क बस जरा सा है, कि उत्तरी यूरोप में होलिका किसी झील, या नदी के किनारे जलाई जाती है, जो अपने तरल रूप में यहाँ अप्रैल बीतने के बाद ही मनती है। उधर पेरू और उसके पड़ोसी दे ा इक्वाडोर में फरवरी-मार्च के महीनों में वह चीज़ नज़र आती है, जिसे हमारे यहाँ होली का हुड़दंग कहते हैं। पेरू के हुड़दंगी तो जब-तब भारत से भी ज्यादा हिंसक हो उठते हैं। उन्हें काबू करने के लिए पुलिस बुलानी पड़ती है। पिछली सदी में तो एक बार वाटर गेम्स पर प्रतिबंध ही लगा दिया गया था।

एक ही मौसम में पड़ने वाले भारत, पेरू और फिनलैंड के त्यौहारों में कोई फर्क नहीं दिखेगा। अलबत्ता धर्म और अध्यात्म के धरातल पर, इनके बीच कुछ बुनियादी फर्क हैं। होलिका दहन और होली हिन्दुओं के त्यौहार हैं। हिन्दू माइथॉलजी में इन दोनों को आपस में जोड़कर देखा जाता है, हालाँकि इस तरह का कोई पौराणिक किस्सा हमें नहीं मिलता, जिससे रात में होलिका जलाने के ठीक अगले दिन रंगों से होली खेलने का सिलसिला जुड़ता हो। उधर पेरू के वाटर गेम्स, उत्तरी यूरोप की वालपर्जिस नाइट, बाकी यूरोप में ठेठ गर्मियों में मनाई जाने वाली मिडसमर नाइट किसी न किसी रूप में ईसाई संस्कृति के साथ जुड़े हैं और इनकी व्याख्या ईसा मसीह और संत जॉन के जीवनचरित से जोड़ कर की जाती है।

सतह के नीचे सभी मानते हैं कि ये त्यौहार यूरोप और लैटिन अमेरिका में ईसाइयत पहुँचने के पहले से मनाए जा रहे हैं और इनका संबंध कहीं न कहीं फसल कटाई से है। उत्तरी यूरोप में फसलें देर से कटती हैं, लिहाज़ा वालपर्जिस नाइट 30 अप्रैल को और मिडसमर नाइट 20 से 24 जून के बीच किसी तारीख को मनाई जाती हैं। संत जॉन की जन्मतिथि के करीब पड़ने की वजह से मिडसमर नाइट को कहीं-कहीं जुहानुस भी कहा जाता है।

इसके विपरीत लैटिन अमेरिका में मुख्य फसलों की कटाई का सीज़न कमोबे ा भारत जैसा ही है, लिहाज़ा वहाँ वाटर गेम्स फरवरी-मार्च में खेले जाते रहे हैं। कैथलिक परंपरा में यह समय कार्निवाल का है, लिहाज़ा होली जैसे ये खेल धीरे-धीरे कार्निवाल का हिस्सा बन गए। हिन्दुओं की होली की तरह कैथलिकों के कार्निवाल की तिथि भी आगे-पीछे होती है। ईसा मसीह के नवजीवन पर्व ईस्टर की तिथि 22 मार्च और 25 अप्रैल के बीच पड़ सकती है-कार्निवाल का उत्सव इसके 40 दिन पहले समाप्त हो जाना चाहिए। यह एक संयोग ही है, लेकिन 2011 में होली और कार्निवाल की तिथियाँ एक-दूसरे के बहुत करीब पड़ी थीं।

भारत में होलिका दहन का एक बड़ा भौगोलिक संदर्भ भी हैं।

पड़ोसी दे I ईरान में इसके बहुत करीब की तिथियों पर पड़ने वाला त्योहार चहार Iनबे सूरी (चौथे बुधवार का भोज) होलिका के साथ हर मामले में मिलता-जुलता है। इसमें बुराई के प्रतीक एक ठूँठ के इर्दगिर्द लड़कियाँ, पत्तियाँ और उपले जमा किए जाते हैं, फिर इसमें आग लगाकर लोग आग की परिक्रमा करते हैं और उसके ऊपर से कूदते हैं। इस दौरान वे 'जर्दिए मन अज तो, सुर्खिए तो अज मन' (मेरी जर्दी तेरी हो, तेरी लाली मेरी हो) के नारे भी लगाते हैं। इस फारसी मंत्र का अर्थ है- आग मेरी सारी बीमारियाँ लेकर पीली पड़ जाए, बदले में अपनी लाली मुझे देकर अगले साल मुझे स्वस्थ रखे। ईरान में इस त्यौहार के 1700 ईसा पूर्व Iरू होने का इतिहास मिलता है। क्या दोनों दे Iों के बीच परंपरा की यह एकता आर्यों को दो प्रमुख Iाखाओं के साझा दौर से निकली है?

यहाँ चहार Iनबे सूरी के बारे में दो और जानकारियाँ काम की हो सकती हैं। गत साल इसे 21 मार्च को, मनाया गया। इसे मनाने के दौरान दिखे उत्साह से खीझकर ईरान के एक बड़े धार्मिक नेता ने अपनी संसद 'मज़लिस' से इस गैर-इस्लामी परंपरा पर रोक लगाने की माँग की। संभव हो तो इस नेता को फारसी और हिंदवी के महाकवि अमीर खुसरो की वे रचनाएँ भेजी जानी चाहिए, जिनमें होली के रंग सूफ़ी इस्लाम के साथ घुले-मिले हैं। अपने दायरे से बाहर निकल कर देखने पर अपने त्योहार, अपनी परंपराएँ और भी प्यारी लगती हैं। किसी धार्मिक या राजनीतिक समझ के तहत अगर हम इनका दायरा सिकोड़ने की कोI I करते हैं तो त्योहारों का कुछ नहीं बिगड़ता, अलबत्ता हम खुद छोटे हो जाते हैं।

ब्रिटि I कवि स्टीफन स्पेंडर के उद्‌गार

भारत एक मात्र ऐसा दे I है जो ब्रिटि I साम्राज्य का हिस्सा था पर वास्तविक अर्थों में अब भी वह उससे बाहर नहीं निकल पाया है। यह दे I इतने दिनों बाद भी अंग्रेजी की गुलामी से उबर नहीं पाया है।

सुख-दुःख़- एक सिक्के के दो पहलू

-उमा मोंगा

सुख-दुःख एक अहसास है।
कभी कोई दूर, और कभी कोई पास है।
इन्हें न लेकर आये थे, न लेकर जायेंगे।
सुख-दुःख सब यहीं मिले, और यहीं छूट जाएँगे।
बड़ी अद्भुत है ज़िन्दगी, न िाकायत करो कि उदास है ज़िंदगी।
ज़िन्दादिली से जीने का ही नाम है ज़िंदगी।

दुःख का साथी सदा सुखी। सुख-दुःख समय के दो पहिये हैं। दोनों का समान महत्व है। जो व्यक्ति दुःख का सम्मान करता है उसको कोई भी दुःख दुःखी नहीं करता। दुःख की महत्ता सुख से ज़्यादा है।

गुलाब काँटों में रहकर भी सुखी है।
इन्सान महलों में रहकर भी दुःखी है।।

दुःख में प्रभु की याद - एक दिन भगवान कृष्ण ने अपनी बुआ कुन्ती से कहा- तुम मुझसे वरदान माँग लो। तब महारानी कुन्ती ने कहा-मेरे जीवन में दुःख आते रहें, ऐसा वरदान दो। श्री कृष्ण ने आ चर्य से पूछा - बुआ दुःख से तो सब घबराते हैं, छुटकारा पाना चाहते हैं, फिर भी तुम दुःख की कामना क्यों करती हो?

प्रसन्न भाव से कुन्ती ने कहा- दुःख प्रभु की याद दिलाता है। मैं तुम्हें कभी भूलूँ नहीं इसलिये दुःख चाहती हूँ। कुन्ती ने सदा दुःख का स्वागत किया और कहा-

घर-घर मत जा रोये रे दुःखड़ा बहुत पछतायेगा।
मेरो घर खुलो छोड़यो, तू कद आएगा।

इतिहास गवाह है कि संत तुकाराम को कर्क ाा, झगड़ालू पत्नी का योग मिला तो उसने अपने भगवान का धन्यवाद करते हुए कहा - "प्रभु! मुझे संसार की आसक्ति से बचाने के लिये अच्छी व्यवस्था कर दी, पत्नी के रूप में अंकु ा लगा दिया। ताकि मेरा मन राग-मोह में न उलझे, बड़ी कृपा की।

देखा जाये तो ज्ञानी पुरुषों को, दूसरों के दोषों में भी गुण नज़र आते हैं। इसलिये वे दुःखी नहीं होते। अतः इन्सान की दुःख के प्रति जैसी सोच व दष्टि होगी वैसी ही सष्टि नज़र आयेगी। महाभारत में श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर और दुर्योधन को अच्छे-बुरे लोगों की सूची बनाकर लाने को कहा। दोनों गये। खूब घूमे, पर युधिष्ठिर ने सूची में किसी का भी नाम नहीं लिखा, क्योंकि उसे कोई भी बुरा व्यक्ति नहीं मिला। सब लोग अच्छे ही लगे। उधर दुर्योधन की पूरी सूची भर गई क्योंकि उसे बस बुरे ही बुरे नजर आए, अच्छा कोई नहीं मिला। यह है सोच का प्रतिफल।

एक नगर में एक सेठ थे। जो ई वर-भक्ति में ही अपना जीवन-यापन किया करते थे। कुछ ईर्ष्यालु व्यक्तियों ने राजा से उनकी ि क़ायत की और कुछ आरोपों में उन्हें फँसा दिया। वहाँ के राजा ने उस सेठ को कारागार में बन्द करवा दिया। वह अभिमानी राजा, कैद का निरीक्षण करते हुए, एक दिन, उस सेठ के पास आया और पूछा- कैसे हो? तो सेठ ने जवाब दिया बहुत आनंद में हूँ। जेल से बाहर मैं बहुत व्यस्त था। स्वाध्याय का समय ही नहीं मिलता था। अब मैंने सारी धार्मिक पुस्तकें मँगा ली हैं और उन पुस्तकों का स्वाध्याय करता हूँ और आनन्द में समय बिता रहा हूँ। अभिमानी राजा सेठ को दुःखी देखना चाहता था। उसने वो सारी पुस्तकें वहाँ से हटवा दीं। 15 दिन बाद राजा फिर जेल का निरीक्षण करने आया और देखा कि वह सेठ उसी तरह से खु ा और आनन्दित है। राजा ने फिर सेठ का हाल पूछा, तो सेठ ने कहा ई वर की बड़ी कृपा है अच्छा किया आपने पुस्तकें हटवा दीं। अब मैं गीत, कविता लिखने में व्यस्त रहता हूँ। इसका सुख ही अलग है। अब राजा ने लिखने पर प्रतिबन्ध लगा दिया तो सेठ ने ध्यान और साधना में समय व्यतीत करना ुरू कर दिया। अब राजा चाहकर भी उस पर प्रतिबंध नहीं लगा सका। राजा को समझ आ गया कि सेठ हर हाल में जीना जानता है।

उसने तत्काल सेठ को रिहा कर दिया। अतः दुःखी होना, न होना व्यक्ति पर निर्भर करता है।
बाह्य वस्तुओं में न दुःख देने की क्षमता है न सुख देने की। अपने दुःख का आरोप दूसरों पर लगाना अज्ञानता है।
जैसा बीज वैसा फल।
बोया बीज बबूल का आम कहाँ से खाय।
हर भौतिक वस्तु का बँटवारा किया जा सकता है, पर सुख-दुख का नहीं। इसका फल तो कर्त्ता को ही भोगना पड़ता है।
अतः मानव भाग्य को कोसने में जितना समय लगाता है उतना अगर भाग्य निर्माण में लगाए तो वह संसार की सब निधियों को पा जाए और सुख का साम्राज्य स्थापित हो जाए।
सुख का संबंध स्वयं प्रारब्ध से है जिसे भोगे जाने वाले कर्म कहते हैं।
इन्सान दुःखी क्यों होता है? आज इन्सान दुःखी है अपनी ईर्ष्या की वत्ति से। वह दुःखी है अपने रि तेदार या पड़ोसी की उन्नति से और लगा रहता है उसे नीचे दिखाने में या नुक़सान पहुँचाने में। अतः ईर्ष्यालु व्यक्ति हमे ाा दुःखी रहता है।
एक बार आइन्सटीन से किसी ने पूछा, संसार में इतने दुःख हैं जबकि विज्ञान ने इतने सुख के साधनों की खोज की है? तो आइन्सटीन ने जवाब दिया कि विज्ञान ने अभी अच्छे मानव बनाने की कोई कल्पना ही नहीं की है और न ही कोई अन्वेषण हो रहा है।
हम देखते हैं कि सुख व दुःख व्यक्ति की कार्य-प्रणाली पर निर्भर हैं। वह चाहे तो अपना जीवन खु ायों से भर ले या फिर काँटों की सेज सजा ले। देने वाले ने तो कोई भी कमी नहीं की, दामन हमारा ही छोटा हो गया।

अधिष्ठाता व संचालिका
आर्य वीरांगना दल - आर्य समाज
सी-3 जनकपुरी, नई दिल्ली - 110058

हिन्दुस्तान के विभाजन में गाँधी जी की भूमिका

-कन्हैयालाल एम. तलरेजा

यह एक तथ्य है कि गाँधी जी मातभूमि के विभाजन के पूर्णतः विरुद्ध थे। उन्होंने अपनी पत्रिका "हरिजन" में अपने विचार निम्नलिखित रूप में व्यक्त किए: "मैं पूरी तरह आ वस्त हूँ कि मुस्लिम लीग द्वारा की गई पाकिस्तान की माँग इस्लामसम्मत नहीं है और मुझे इसे पापमय बताने में भी कोई हिचक नहीं है। अतः जो लोग भारत को दो समूहों में बाँटना चाहते हैं वे भारत और इस्लाम के समान त्रु हैं। वे मेरे टुकड़े कर सकते हैं पर वे मुझसे ऐसी कोई बात नहीं मनवा सकते जिसको मैं गलत मानता हूँ।"

(हरिजन, अंग्रेजी साप्ताहिक, अक्टूबर 6, 1946)

यदि गाँधी जी अपने पूर्वोक्त विचारों पर स्थिर रहते और उन पर अटल संकल्प के साथ आचरण करते तो विभाजन की विभीषिका से बचा जा सकता था। पर यह घोर विडम्बना, व्यथा और विस्मयभरी बात है कि वे अपने विचारों पर साहसपूर्वक जमे नहीं रह सके। हिन्दू-मुस्लिम एकता की सनक ने उन्हें कई बार डगमगाया था। एक ओर तुष्टिकरण के उस समर्थक ने कहा था : "वैयक्तिक रूप से, मुझे ऐसी कोई वस्तु नहीं चाहिए जिसके विरुद्ध मुस्लिम हों।" जबकि दूसरी ओर उनके अन्दर छिपे सत्यान्वेषी ने घोषणा की थी : "मैं भारत के विभाजन को पाप समझता हूँ।" (महात्मा गाँधी : हिन्दुओं और मुसलमानों को सम्बोधन) (गाँधी रचनावली, खण्ड-3, पष्ठ-454)

जब उनके मस्तिष्क पर हिन्दू-मुस्लिम एकता की सनक सवार हो गई, तब उन्होंने असहाय होकर मातभूमि के हत्यारों की त्रुतापूर्ण माँग के सामने घुटने टेक दिए और कह डाला : "मुस्लिम ासन भी भारतीय ासन के समान है। मैं सदैव ब्रिटि ा ासन की तुलना में मुस्लिम ासन को प्राथमिकता दूँगा।" (पूर्वोक्त, पष्ठ 467-469)

किन्तु जब उनके हृदय में एक ई वरभीरु व्यक्ति की ध्वनि गुंजित हुई तब वे कह उठे : "पाकिस्तान की माँग का अर्थ है कि असंख्य हिन्दुओं और मुस्लिमों ने एक राष्ट्र के रूप में मिलजुल कर रहने का जो कार्य ताब्दियों तक किया था वह

सब मिट्टी में मिल जाएगा।" (पूर्वोक्त, पष्ठ 415)
गाँधी जी हृदय से अखंड हिन्दुस्तान के पक्षधर थे, किन्तु वे मुस्लिम लीग के सदस्यों के सामने अपनी राय बिना हिचकिचाहट व्यक्त करने और उन्हें उनके द्वारा किसी अपमानजनक ार्त थोपी जाने के बिना युक्तियुक्त ार्तों पर राजी करने का साहस नहीं जुटा पाते थे। जहाँ तक दे ा की एकता का संबंध था यह हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों की ही भलाई में था। गाँधी जी यह स्वीकार करने में विफल रहे थे कि यदि हिन्दुओं ने एक राष्ट्र के, अर्थात् अखंड हिस्दुस्तान के सिद्धान्त के प्रति सकारात्मक दष्टिकोण अपनाया तो मुस्लिम कभी भी हिन्दुओं के प्रति अनुग्रह व्यक्त नहीं करने जा रहे थे। मुहम्मद अली जिन्ना और मुस्लिम लीग के अन्य कट्टरपंथी नेतागण गाँधी जी और उनके ि ाष्यों की कमजोर नब्ज़ को पहचानते थे। अतः जितना वे उनके सामने अधिक समर्पण करते जाते थे उतना ही अधिक वे कड़ा रुख धारण कर लेते थे। भारत की कुल जनसंख्या में 77 प्रति ात हिन्दू थे, अतः वे मुस्लिम लीग से अपनी ार्तें मनवा सकते थे और वे अखंड हिन्दुस्तान के प्रस्ताव को मुसलमानों पर थोप सकते थे जिनकी संख्या 23 प्रति ात से भी कम थी। परन्तु गाँधी जी और उनके अनुयायियों की भीरुता तथा तुष्टिकरण की अनुचित नीति के कारण अल्पसंख्यक समुदाय ने बलात् बहुसंख्यक समुदाय पर दे ा के विभाजन का विधिविरुद्ध और अस्वाभाविक निर्णय थोप दिया। जब गाँधी जी ने जिन्ना के सामने समर्पण करते हुए बहुत ही दीन-हीन रूप से संयुक्त भारत के अपने प्रस्ताव को स्वीकार करने का अनुनय-विनय किया, चाहे संयुक्त भारत का प्रधानमंत्री जिन्ना ही हो और उसके सभी मंत्री मुस्लिम ही हों, तब उनके द्वारा किया गया यह कार्य अनुचित, मूर्खतापूर्ण, तर्कविरुद्ध और अदूरदर्ि ातापूर्ण ही था। 23 प्रति ात मुसलमानों का नेता संयुक्त भारत का प्रधानमंत्री क्यों होना चाहिए? यदि गाँधीजी संयुक्त भारत के पक्षधर थे, तो उनसे यह आ ाा नहीं थी कि वे उस जिन्ना के लिए प्रधानमंत्री के पद का प्रस्ताव करके स्वयं को और हिन्दुस्तान के 77 प्रति ात हिन्दुओं को अपमानित करें जो समस्त मंत्रियों का चयन अपने सम्प्रदाय से करना चाहें। उनके सामने झुकने के बजाय वे बहुसंख्यकों के नेता होने के नाते अपने अधिकार तथा ाक्ति

का प्रयोग कर सकते थे पर वे ऐसा करने में विफल रहे। गाँधीजी के घटिया समर्पण का कमजोर रवैया ही त्रासद विभाजन का प्रमुख कारण था।

इसके अतिरिक्त गाँधी जी अपने विचारों पर दढ़ता से जमे नहीं रह सके। वे प्रायः अस्थिरमति और दोलायमान रहते थे। एक ओर वे अपनी अन्तरात्मा की आवाज व्यक्त करते थे : "विभाजन का अर्थ प्रत्यक्ष असत्य है।" (महात्मा गाँधी : हिन्दुओं और मुसलमानों को सम्बोधन (गाँधी रचनावली), खण्ड–3, पष्ठ 415)

उन्हें यह कहते हुए भी कोई हिचक नहीं हुईः "भारत के टुकड़े करने से पहले मेरे टुकड़े कर दीजिए। (महात्मा गाँधी : हिन्दुओं और मुसलमानों को सम्बोधन) (गाँधी रचनावली), (खण्ड 3, पष्ठ 437)

जबकि दूसरी ओर उन्होंने मतान्ध कट्टरपंथियों की चिरौरी भी की थी : "यदि मैं कांग्रेस को अपने साथ रख सकता हूँ तो मैं मुसलमानों को ाक्ति प्रयोग करने का कष्ट नहीं दूँगा। मैं उनके ाासन के अधीन भी रह लूँगा, क्योंकि यह फिर भी भारतीयों का ही ाासन होगा।

यह सर्वज्ञात तथ्य है कि गाँधी जी पर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का प्रभाव था, जो कि एक कट्टर मुस्लिम थे और ये वे ही थे जो गाँधी जी से मुसलमानों के पक्ष में वक्तव्य दिलवाया करते थे। वास्तव में गाँधी जी ने गुप्त रूप से मौलाना आज़ाद को कांग्रेस तथा हिन्दुओं की ओर से अंग्रेजों के साथ बात करने के लिए प्राधिकृत कर दिया था। गाँधी जी के निम्नलिखित ाब्द इसका स्पष्ट प्रमाण हैः

"मैं हृदय से मौलाना साहेब की अंग्रेजों को की गई इस पे ाक ा (प्रस्ताव) का समर्थन करता हूँ कि भारत की बागडोर किसी भी सम्प्रदाय को सौंप दी जाए। यदि सत्ता मुस्लिम जनसमुदाय को हस्तांतरित की जाती है तो मुझे कोई खेद नहीं होगा।"

यह बात चरम स्थिति तक तब पहुँची जब कांग्रेस के वास्तविक ताना ााह गाँधी जी ने अधिकारपूर्वक जिन्ना को पत्र भेजा, जिसमें उन्होंने लिखा था : "कांग्रेस को इस पर कोई आपत्ति नहीं होगी कि ब्रिटि ा सरकार उन सारी ाक्तियों को, जिनका वह आज प्रयोग करती है, सम्पूर्ण भारत जिसमें तथाकथित भारतीय भारत (इंडियन इंडिया) भी सम्मिलित है,

की ओर से मुस्लिम लीग को हस्तांतरित कर दे। कांग्रेस न केवल मुस्लिम लीग द्वारा बनाई जाने वाली सरकार को निर्बाध बनने देगी वरन् उस सरकार में भागीदार भी बनेगी। (वीर सावरकर, द्वितीय संस्करण, पष्ठ 323)

जब गाँधी जी कांग्रेस के कोई पदाधिकारी ही नहीं थे तब उन्होंने कांग्रेस की ओर से जिन्ना को आ वासन क्यों दिया? भारत सरकार की सम्पूर्ण ाक्तियाँ केवल मुस्लिम लीग को क्यों हस्तांतरित की जानी चाहिए थीं, जबकि यह पार्टी 23 प्रति ात से भी कम मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती थी? हिन्दुस्तान के करोड़ों हिन्दुओं के भाग्य का निर्णय एक व्यक्ति द्वारा क्यों किया जाना चाहिए था? क्या यह धूर्त ताना ाही नहीं है? क्या यह अनुचित तुष्टिकरण नहीं है? जो दे ाभक्त अपनी मातभूमि से प्यार करते हैं उनके मस्तिष्क में ये प्र न सहज रूप से उठेंगे।

सत्यान्वेषी गाँधी जी ने, जिन्हें गोपनीयता से घणा थी, पर्दे के पीछे रहकर गुप्त रूप से कार्य किया और राजा जी (राजगोपालाचारी) को जनता के सम्मुख उस पाकिस्तान योजना को जिन्ना को सौंपते हुए प्रस्तुत किया जिसका निर्माण स्वयं गाँधी जी द्वारा आगा खाँ पैलेस में उनके उपवास के दौरान किया गया था। 12 अप्रैल 1943 को बंगलौर में पैगम्बर के जन्मदिवस की वार्षिकी के अवसर पर बोलते हुए राजा जी ने कहा था : "मैं पाकिस्तान के निर्माण का समर्थन करता हूँ क्योंकि मुझे ऐसा राज्य नहीं चाहिए जहाँ हम हिन्दू तथा मुसलमान दोनों का सम्मान न हो। मुसलमानों को पाकिस्तान लेने दीजिए। यदि हम इससे सहमत होते हैं, तो हमारा दे ा सुरक्षित रह सकेगा। (डॉ. पट्टाभि सीतारमैय्या : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास, खण्ड 2, पष्ठ 506-407)

वीर सावरकर राजा जी को विदग्ध, मूढ़मति मुल्ला बताया करते थे। मुहम्मद अली जिन्ना ने 30 जुलाई 1944 को अपने प्रेस साक्षात्कार में गाँधी जी के गुप्त अनुदे ाों के अन्तर्गत राजा जी द्वारा प्रस्तुत पाकिस्तान के प्रस्ताव का संदर्भ देते हुए कहा था : "जहाँ तक उक्त प्रस्ताव के गुण-दोषों का सम्बन्ध है, गाँधी जी एक ऐसे पाकिस्तान का प्रस्ताव कर रहे हैं जो सारहीन है, अपंग है, खंडित है और घुन लगा है। इस प्रकार वे यह आभास दे रहे हैं कि उन्होंने हमारी पाकिस्तान

योजना और मुस्लिम माँग को पूरा कर दिया है।"

राजा जी ने मुहम्मद अली जिन्ना को भेजे गए और प्रेस को जारी किए गए अपने एक तार (टेलीग्राम) में कहा था : "यद्यपि मि. गाँधी के पास इस विषय पर कोई प्रतिनिधिक या वि ोष क्षमता नहीं है तो भी उन्होंने मेरे प्रस्तावों का नि चत रूप से अनुमोदन किया है और इसी आधार पर आपसे सम्पर्क बनाने के लिए मुझे अधिकृत किया है। ऐसी अधिकाधिक संभावना है कि उनकी राय के महत्त्व को देखते हुए कांग्रेस की स्वीकृति मिल जाएगी।" (द टाइम्स ऑफ इंडिया, अंग्रेजी दैनिक, मुम्बई, जुलाई 31, 1944)

बिल्ली थैले से बाहर आ ही गई। पूर्वोक्त तार (टेलीग्राम) से इस रहस्य की जानकारी के अध्येता सत्यान्वेषी गाँधी जी के इस गुप्त आ वासन पर ध्यान दें-उन गाँधी जी के, जिन्होंने ई वर को सत्य, सद्विवेक और नैतिकता के रूप में परिभाषित किया था और जो गोपनीयता से घणा करते थे। पाठक पंचगनी से जारी राजा जी के 16 जुलाई, 1944 के वक्तव्य में की गई उस बात की स्वीकृति को भी नोट करें, जिसमें उन्होंने कहा था : "मुझे कार्य आरम्भ किए हुए अब दो वर्ष हो गए हैं। यद्यपि मैंने इस योजना के प्रति गाँधी जी का व्यक्तिगत समर्थन प्राप्त कर लिया था और इसमें वे सभी बातें मान ली गई थीं, जिनकी मुस्लिम लीग ने अपने 1940 के प्रस्ताव में माँग की थी।"

गाँधी जी ने अपने दिनांक 6 अक्टूबर, 1943 के "हरिजन" में पाकिस्तान की माँग को पापतुल्य माना था, जबकि उससे तीन वर्ष पहले उन्होंने गुप्त रूप में राजा जी को प्राधिकृत किया था कि वे जिन्ना को पाकिस्तान का प्रस्ताव प्रस्तुत करें। क्या यह उस सत्यान्वेषी का दोहरा मानदंड नहीं है? क्या उनकी ये उक्तियाँ "भारत के टुकड़े करने से पहले मेरे टुकड़े कर दीजिए"..... "विभाजन का अर्थ घोर असत्य है" उनके उस कार्य का खंडन नहीं करती जिसको करने के लिए उन्होंने न केवल अपनी ओर से, वरन् कांग्रेस पार्टी की ओर से, राजा जी को पाकिस्तान की योजना के प्रति अपने समर्थन को जिन्ना को सूचित करने के लिए गुप्त रूप से प्राधिकृत किया था, मानो कांग्रेस पार्टी उनकी जेब में थी? क्या यह छल-कपट नहीं है? क्या यह कपटाचार नहीं है? क्या जो

सत्य, विवेक और नैतिकता की जोर- ाोर से दुहाई देता था उसने स्वयं को धोखा नहीं दिया था? क्या उन्होंने उन करोड़ों हिन्दुओं को धोखा नहीं दिया जो भोले-भाले होते हुए उन पर अन्धवि वास रखते थे? सर रेगिनाल्ड क्रेडक ने गाँधी जी के सम्बन्ध में निम्न प्रकार लिखा था : "यह कहना तो असंभव है कि उसने अपने आपको कहाँ तक धोखा दिया था अथवा जानबूझकर दूसरों को धोखा दिया था पर यह पूर्ण सत्य है कि रीर पर नाममात्र कपड़े पहनने वाले उस हिन्दू संन्यासी का उन्मादपूर्ण प्रभाव बुद्धिमान लोगों पर अधिक समय तक नहीं होता था, किन्तु अज्ञानी और अन्धवि वासी लोगों पर उसका भयावह प्रभाव होता था। (सर रेगिनाल्ड क्रेडक : हिन्दुस्तान में संकट की स्थिति, लंदन, पष्ठ 115)

जब गाँधी जी की ओर से राजा जी द्वारा जिन्ना को प्रस्तुत किए गए पाकिस्तान के गुप्त प्रस्ताव पर से पर्दा उठा तब कांग्रेसी क्षेत्रों में और प्रेस में अस्थायी हलचल हुई थी। वे यह जानकर अत्यधिक हतप्रभ हुए कि उनके पवित्र पिता गाँधी जी ने मातभूमि के अंगविच्छेद की अपवित्र योजना को अपना गुप्त समर्थन प्रदान किया। पर उनमें हड़कम्प थोड़ी अवधि तक ही रहा। फिर उन्होंने भी महात्मा के विषैले और विद्वेषपूर्ण कार्यों पर चुप्पी साध ली। उनमें से कुछ ने राजा जी पर ही दोषारोपण करना आरम्भ कर दिया। वस्तुतः राजाजी गाँधी जी के हाथ की कठपुतली थे। इस विषय में वीर सावरकर ने दो टूक कहा था : "इस दुष्कृत्य के लिए अकेले राजाजी को खलनायक ठहराना न्यायसंगत नहीं है। इसमें उनका दोष इतना ही था कि उन्होंने अपने आपको गाँधी जी के हाथों का हथियार बन जाने दिया।.....

भारत गाँधी जी और राजाजी की निजी सम्पत्ति नहीं थी। जिसे वे अपनी इच्छानुसार किसी को भी उपहार में दे देते। (क. वीर विनायक दामोदर सावरकर : ऐतिहासिक वक्तव्य (भविष्यवक्ता द्वारा चेतावनियाँ)

वीर सावरकर ने घोषणा की थी कि कांग्रेस पार्टी के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' की अन्तिम परिणति 'भारत तोड़ो आन्दोलन' के रूप में हुई जैसा कि उन्होंने भविष्यवाणी की थी। यहाँ यह बात ध्यान दिए जाने योग्य है कि गाँधी जी ने अंग्रेजों से भारत छोड़ने को तो कहा था पर साथ ही वह उनकी सेना

के भारत में रुकने के लिए भी सहमत हुए थे। ऐसा करना हिन्दुस्तान के ऊपर ब्रिटि ा सेना के ाासन की भयानक पुनःस्थापना के समान था।

वीर सावरकर ने हिन्दुओं से आग्रह किया कि वे हिचकिचाहट के बिना और दढ़प्रतिज्ञ होकर पाकिस्तान विषयक विद्वेषपूर्ण प्रस्ताव की निन्दा करें और अगस्त 1944 के पहले सप्ताह को अखंड हिन्दुस्तान और पाकिस्तान-विरुद्ध सप्ताह के रूप में मनाएँ। वीर सावरकर के नेतत्व में संयुक्त भारत के समर्थकों और मुहम्मद अली जिन्ना के नेतत्व में विघटनकारी ाक्तियों, जिन्हें गाँधी जी और राजाजी का भी समर्थन प्राप्त था, के बीच बल परीक्षा के प्रति भारत के और विदे ाों के राजनीतिक समीक्षकों के बीच तीव्र रुचि उत्पन्न हो गई परन्तु उन्हें बन्दी बना लिया गया था। इस विषय में हिन्दू सभा के स्वयंसेवकों और अन्य राष्ट्रवादियों ने कई स्टे ानों पर काले झंडों के साथ विरोध प्रद ान किया था।

थोड़े दिन बाद गाँधी जी ने जिन्ना से उनके मुम्बई में माउण्ट प्लेजेण्ट रोड स्थित प्रासाद जैसे भवन में मिलने का निर्णय किया। उन्होंने वर्धा से मुम्बई के लिए जिस वि ोष रेलगाड़ी से प्रस्थान किया था, उसकी सुरक्षा हिन्दू नहीं वरन् खाकसार मुस्लिम स्वयंसेवक कर रहे थे और वह रेलगाड़ी ब्रिटि ा सैनिकों के सरंक्षण में थी, जो उसी गाड़ी मे यात्रा कर रहे थे। एल. जे. थट्टे के नेतत्व में हिन्दू सभा के स्वयंसेवकों के एक समूह ने सेवाग्राम स्थित गाँधी जी की कुटिया के सामने दो दिन तक धरना दिया था और भरसक प्रयास किया था कि गाँधी जी मातभूमि के हत्यारे जिन्ना से न मिलें।

पी-95, पांडव नगर, दिल्ली-91

मनुष्य जिस संगति में रहता है, उसकी छाप उस पर पड़ती है। उसका निज का गुण छिप जाता है और वह संगति का गुण प्राप्त कर लेता है। *-एकनाथ*

संगत से चरित्र में परिवर्तन नहीं होता। ढाल और तलवार सदा एक साथ रहती है, पर फिर भी एक घातक है और दूसरी रक्षक। दोनों का स्वभाव भिन्न है।

मुझे बताओं कि तुम किन के साथ रहते हो और मैं तुम्हें बता दूँगा कि तुम कौन हो। *-लॉर्ड चेस्टरफील्ड*

वक्फ़ बोर्ड समाप्त करें

–प्रफुल्ल गोरडिया

श्रीमान् जी,

21 अप्रैल 2005 को काँस्टीट्यू ान क्लब, नई दिल्ली में एक जनसभा में लिये गये निर्णय के अनुसार, हमारी माँग है कि भारत में वक्फ़ नामक संस्था को समाप्त किया जाय। इसका मुख्य कारण है कि वक्फ़ की समस्त सम्पत्ति "अल्लाह" की मानी जाती है। इस्लामी दे ों में ही दे ा की प्रभुसत्ता "अल्लाह" की होती है। तार्किक दष्टि से इसका मतलब हुआ कि भारत में प्रत्येक वक्फ़ संपत्ति पर न तो आयकर, न ही ाहरी संपत्ति सीमा कानून लागू होते हैं।

अधिकां ा वक्फ़ संपत्तियाँ युद्ध में विजय अथवा लूट द्वारा प्राप्त हुई होती हैं। एक प्रकार से वे विजय अभियान के दौरान लूटी गई सम्पत्ति के वे भाग हैं, जिन्हें इनाम के तौर पर प्रियजनों को बाँटा गया था या जिन्हें भावी जिहाद के लिये आर्थिक स्रोत बना दिया गया। इन वक्फ़ संपत्तियों की कोई धार्मिक मान्यता नहीं है, क्योंकि इनका कोई उल्लेख कुरान ारीफ में नहीं है। अनेक मुस्लिम दे ों में इनका उन्मूलन हो चुका है। यथा, टर्की में सन् 1924, मिश्र में सन् 1842, ट्यूनीि ाया में सन् 1957, सीरिया और लेबनान में प्रथम युद्ध के बाद तथा सोवियत यूनियन में सन् 1917 की जनक्रान्ति के बाद वक्फ़ समाप्त कर दिये गये।

सामूहिक रूप से ाहरी इलाक़ों में वक्फ़ सम्पत्तियाँ ही सबसे बड़ी संपत्तियाँ हैं। 12 मार्च 2005 के अंग्रेजी दैनिक टाइम्स ऑफ इण्डिया के अनुसार दिल्ली विकास प्राधिकरण के बाद वक्फ़ों के पास से ही सबसे अधिक भू-सम्पत्ति है। उत्तरप्रदे ा के सुन्नी वक्फ़ बोर्ड ने ताजमहल पर अपना दावा इसी आधार पर ठोका है कि इसमें कब्रें हैं। यदि इस तर्क को माना जाय तो सारे दे ा में अनगिनत इलाके छोटे-मोटे इस्लामी राज्यों के रूप में उठ खड़े होंगे।

सन् 1948 में दे ाी रियासतों का भारत राज्य में विलय कर दिया गया था। समाज में समता स्थापित करने के लिए, स्वतंत्रता के तुरन्त बाद जमींदारी प्रथा समाप्त कर दी गई। ऐसे में, वक्फ़ों को भी सरकारी नियंत्रण में क्यों नहीं लिया जाता? क्यों एक (मुस्लिम) समुदाय को अन्य समुदायों के मुक़ाबले में वरीयता दी जा रही है? तथ्य यह है कि भारत में, वक्फ के माध्यम से इस्लामी राज्य चलाया जा रहा है।

Warrior Saint : Guru Gobind Singh

-Kulbir Kaur

Guru Gobind Singh was not only a great warrior and creator of the Khalsa sect, but also a poet and philosopher. Well-versed in Punjabi, Persian, Braj and Sanskrit, his compositions are addressed to the Almighty-who is Akal or timeless, immortal, formless, beyond name and beyond place.

In his composition. Jaap Sahib, Guru Gobind Singh marvels at the beauty, balance and rhythm of the Creator and wonders, 'Who can recite all Your names!' The Jaap Sahib glorifies opposites and the contradictory manifestation of His Creation. Hence, everything is worthy of praise. The world is a balance of the two. In his bani, the Guru says, 'He is Destroyer and Creator : He is Death, yet the Sustainer. He is tumult and peace, he is darkness as well as supreme illumination'. The Jaap Sahib presents the nirgun as well as sagun aspects of the Almighty. To understand him, love and surrender are sufficient.

The Jaap Sahib, comprising 199 pauris or verses, contains 1,000 names of the Almighty. Jap means to recite, utter or simran-to remember the Almighty. It is one of the five banis that a Sikh must recite everyday. Jaap Sahib is also to be recited by the Panj Piyare while preparing Amrit on the day of the initiation ceremony.

Meditation by constant rememberance of His name produces wismad, a state of wonder and intoxication leading to ultimate bliss. Guru Gobind Singh emphasised the unity of all creation and said differences of religion, caste, creed and faith are irrelevant. Ultimately, there is One force, One power and One truth. "All men are the same though they appear different.....the names Allah and Abekh are for the same God; the same is referred to in the puranas and the Quran. All human beings are reflection of one and the same Lord. Recognise the whole human race as one, "says the guru.

This unity was the mission he was born with. According to a legend, the birth of Guru Gobind Singh was prophesised by Pir Bhikan Shah, a Muslim Fakir. Guided by divine light, Pir Bhikan Shah approached the child and offered him two bowls, signifying two religions of Hinduism and Islam. The child placed

his hands on both bowls. Guru Gobind Singh's faith was the belief representing Oneness, which could be realised only through devotion, surrender and love.

He believed that only those who have loved shall attain the Lord. If you do not feel any love for God, you will not feel any love for His creation. Love is the only miracle Guru Gobind Singh offered. He said, "Sach Kahon Sun Leho Sabai, jin prem kiyo tin hi praph paio-

Let me tell you the truth; listen everyone: Only those who have loved the Almighty will realise Him."

****

-Inder Raj Ahluwalia

The 10th and last of the Sikh gurus, Guru Gobind Singh, never sought an easy life. His life was a saga of selfless and supreme belief in justice and dharma. It is precisely these qualities that are in demand in contemporary society and which make his life a lofty role model for all of us.

Seeking a new order based on the ideal of sacrifice for the cause of 'dharma' and the rejection of slavary, the guru created the Khalsa sect on Baisakhi day in 1699. His followers were a spiritual and social entity rather than a politically dynamic force. Declaring that "The Khalsa shall not only be warlike but also sweeten the lives of those he has chosen to serve." the guru evolved a new order in which all would be equal. Calling the Khalsa, the 'pure' and his very own, he gave a formal entity to the concept of the 'warrior saint'.

The Khalsas were ordained to believe in one God, shun rituals and superstitions, seek respect for women, and consider everyone as equal. Like ancient sages or Kshatriyas or worriors, their hair would not be shorn as a pledge of dedication of their faith. A steel bracelet to denote the universality of God, a comb to keep the hair clean, underwear to denote chastity, and a steel daggar for defence were the other symbols of the faith, commonly called Kakar, the five K's-Kesh, Kanga, Kara, Kirpan and Kachcha.

The guru's message was that physical prowess was as sacred as spiritual sensitivity. He asked his followers to love their

weapons, and excel in horse riding. marksmanship, and swordsmanship. They were to act as a bridge between Hindus and Muslims, and serve the poor without distinction of caste, creed, or colour. Deg, the community kitchen, would be as important as Teg, the sword, and they would call themselves Singhs or lions, and greet one another with "Wahe Guru ji Ka Khalsa, Wahe Guruji ki Fateh- The Khalsa belongs to God, O'victory be to God."

Guru Gobind Singh was the saviour of not just the Sikhs, but also of other communities. His new order was a mission to 'do right', and this he did right till the end, his ideals eventually costing him his life.

When one considers the turbulent environment we live in today and the blatant crimes against women, the guru's philosophy becomes totally relevant. We'd do well to learn from it and follow it to make our world a better place for everyone, regardless of caste and gender issues.

Shri Swarn Kumar Chaudhari (1.04.1941-9.02.2014)

Shri S.K.Chaudhri was born at Kacchi Kothi in Lahore and came to India as a refugee and struggled against odds of life and emerged to become a reputed Indusrialist by dint of hard work, uprightness and honesty and set up his factory units in Naraina. In 1982, He was decorated with Udyogpatra Award instituted by the Institute of Trade and Industrial Development,Delhi at the hands of Shri M.Hidayatullah, Vice President of India. He espoused the causes of Hinduism and played significant role for success of Virat Hindu Sammelan in 1981 and was well known for helping the social and religious causes by generous donations to varied Institutions all ver Delhi and notably one Lalita Jyoti Anathalaya in Gannaur,Sonipat,Haryana. He founded Mata Hiradevi Charitable Trust and founded Mata Hiradevi Saraswati Vidyalaya,B BLock, Janakpuri. He was Chairperson of C2 Geeta S.D.Mandir and founded its Aushadhalaya with liberal donations for all its activities. During the tenure of Ms.Kiran Bedi as Incharge of Tihar Jail he contributed regularly for Jail reforms and subscribed to innumerable institutions engaged in social welfare. He remained patron of Janakpuri Dharmik & Samajik Mahasangh from its very inception. He was also associated with Janakpuri Club since its foundation and held its office as President. He was imbibed with qualities of Compassion,Tolerance, Forgiveness and was ever ready to lend his helping hand to all in need. With his loss, society is bereft of a unique person who will remain an inspiration to all and sundry. Our respectful Shraddhanjali to the virtuous departed soul!

'Nehru-Patel were divided over sending Army to J & K'
Home Minister prevailled over PM to send troops in 1947

-L.K. Advani

After raking up a controversy over Jawaharlal Nehru calling Sardar Patel a "total communalist", BJP veteran L.K. Advani the otherday about the Nehru versus Patel debate further by saying India's first PM was reluctant to send the Army to Kashmir in 1947 even as Pakistani troops approached Srinagar, but the home minister (Patel) prevailed over him.

Quoting from an interview of Sam Manekshw (then a Colonel) by senior journalist Prem Shankar Jha, Advani in his latest blog said as the tribesmen, supported by Pakistani forces, moved closer to Srinagar, a decision had to be taken. However, Nehru appreared reluctant and felt the issue should be taken to the UN.

Referring to Manekshaw's claim inthe interview, Advani said Lord Mountbatten called a Cabinet meeting soon after Maharaja Hari Singh signed the Instrument of Accession. This was attended by Nehru, Patel and defence minister Baldev Singh. Manekshaw presented the "military situation" in the meeting and suggested the Indian forces be moved there.

"As usual Nehru talked about the United Nations, Russia, Africa, god almighlty, everybody, until Sardar Patel lost his temper. He said, 'Jawaharlal, do you want Kashmir, or do you want to give it away?' He (Nehru) said 'Of course, I want Kashmir'. Then he (Patel) said 'Please give your orders'. And before he could say anything, Sardar Patel turned to me and said, 'You have got your orders', Advani said, quoting Manekshaw from the interview. The Indian forces were then flown to Srinagar to fight the Pakistani forces.

"This report provides a clinching confirmation of the differences

between Nehru and Patel over the Hyderabad action, Advani said.

The Senior BJP leader also claimed the Britain sought to thwart Jammu and Kashmir's accession to India. Both the Indian and Pakistani armies were headed by British generals in 1947-48.

Quoting from a website on General Roy Bucher, the then Commanderin-Chief of Indian Army, Advani said Bucher was opposed to police action in Kashmir and told a Cabinet meeting that it was not possible to bringing the whole of Jammu and Kashmir under control as the British were supporting Pakistan. Pakistan suspected that the Maharaja wanted to accede to India and tried to pre-empt his decision by forcibly seizing the state.

Bucher told the Cabinet that if his advice against police action in Kashmir was not followed, he would resign. "There was a silence while a distressed and worried Nehru looked around. Patel replied, 'You may resign General Bucher, but the police action will start tomorrow', Advani wrote, quoting from the website.

WORDS OF WISDOM

- Sometimes your joy is the source of your smile, but sometimes your smile can be the source of others' joy.
- Whatever liberates our spirit without giving us self-control is disastrous.
- Embrace mistakes and learn from them because that is the only way to unlimited success.
- Every success is the culmination of a series of failures; you can have success only by failing.
- Money is like manure. If you spread it around, it does a lot of good, but if you pile it up in one place, it stinks like hell.
- Energy in a nation is like a sap in a tree, it rises from the bottom up, it does not come from the top side.
- As a rule man is a fool, when it's hot he wants it cool, when it's cool he wants it hot, always wanting what is not.
- He who knows and knows he knows, he is wise – follow him.

SPICES, A VALUABLE ADDITION TO A HEART-HEALTHY DIET

It is not surprising that spices were some of the most valuable items of trade in the medieval era. Used in traditional medicine by herbalists, they have been a part of healing remedies for centuries. Modern medicine too has begun studying the powers of common herbs and spices. Here are a few of these and their benefits.

Coriander Seeds (Dhania)

Coriander seeds are rich in two main compounds — linaloon and decanoic acid. These are known for their cholesterol- and blood sugar-lowering effects. Several animal studies have demonstrated a reduction in total cholesterol, bad cholesterol (LDL) and increase in good cholesterol (HDL). A teaspoon or two of coriander seeds consumed after soaking overnight seems to be beneficial for those suffering from in heart disease and diabetes.

Turmeric

Turmeric or Haldi is well-known as a spice and medicine in Siddha and Ayurveda. The benefits for heart health arise from curcumin, an active principle which is anti-oxidant, anti-clotting, anti-inflammatory and anti-proliferative. Several scientific studies have documented the effect of curcumin in decreasing blood cholesterol levels. Anti-oxidant properties of curcumin may also help prevent cardiovascular complications among diabetics.

Black pepper

Piperine, a major active component in both black and white (de-husked) pepper has numerous reported physiological and drug-like actions. Several scientific studies provide evidence that black pepper has cholesterol-lowering properties and may help in recovery of cardiac function after heart attacks. A word of caution — piperine can strengthen or modify the effects of numerous other medicines, particularly blood thinning agents. Therefore, it is important to seek advice from a qualified professional before using it in therapeutic doses.

Cinnamon (Dalcheeni)

Circulatory stimulant effects of cinnamon have been reported in several books on medicinal plants and in Ayurveda. It helps in reduction of total and bad cholesterol and increase in good cholesterol. It also helps improve insulin resistance, thereby

making it useful in diabetes management.

Fenugreek seeds

Fenugreek seeds (Methi) have been used extensively to prepare extracts and powders for medicinal uses. Fenugreek seed powder has been known to lower levels of serum lipids such as total cholesterol and triglycerides. Phytochemical (saponins) in fenugreek reportedly aid in glucose, cholesterol metabolism and cancer protection. They can be had mixed into chapatis, rice, dal, vegetable, curd, pickle, chutneys, or as sprouts in salad.

Black cumin seeds

Black cumin seeds, also known as kalonji or black caraway, should not be confused with the herb cumin. A recent study revealed that black cumin seeds have a diversified effect on lipid profile. It was found to have a significant impact in lowering total and bad cholesterol.

Ginger (Adarak)

Ginger is well-known for its use in ailments like sore throats, cramps, pains, arthritis, indigestion, vomiting, high blood pressure, etc. Gingerol is believed to relax blood vessels, stimulate blood flow and relieve pain. Ginger is also a powerful anti-inflammatory agent which makes it useful in heart disease, diabetes and cancer. It also has exhibited cholesterol-lowering and anti-clotting activities.

Garlic (Lahasun)

Hippocrates, the father of modern medicine, and Charak, the father of Ayurveda, claimed that garlic acts as a heart tonic by maintaining the fluidity of blood and strengthening the heart. Over centuries, Garlic has acquired a unique position in therapeutic medicine and is associated with lower risk of cardiovascular disease. Over the last 20 years, modern scientific research has confirmed these findings. Allcin, a sulfur-containing compound is one of the key components of garlic. It is known for its cholesterol-lowering, anti-clotting and blood-pressure lowering properties.

Ishi Khosla is a former senior nutritionist at Escorts. She heads the Centre of Dietary Counselling and also runs a health food store. She feels that for complete well-being, one should integrate physical, mental and spiritual health. According to her: "To be healthy should be the ultimate goal for all."

-Indian Express
Dated - 7.12.2013

Cinnamon and Honey-I

HONEY AND CINNAMON, EVERY DAY AND LEAVE ALL THE FOLLOWING AILMENTS

Honey is the only food on the planet that will not spoil or rot. It will do what some call turning to sugar. In reality honey is always honey. However, when left in a cool dark place for a long time it will do what I rather call "crystallizing" When this happens I loosen the lid, boil some water, and sit the honey container in the hot water, turn off the heat and let it liquefy. It is then as good as it ever was. Never boil honey or put it in a microwave. To do so will kill the enzymes in the honey.

Cinnamon and Honey

Bet the drug companies won't like this one getting around. Facts on Honey and Cinnamon: It is found that a mixture of honey and Cinnamon cures most diseases. Honey is produced in most of the countries of the world. Scientists of today also accept honey as a 'Ram Ban' (very effective) medicine for all kinds of diseases. Honey can be used without any side effects for any kind of diseases.

Today's science says that even though honey is sweet, if taken in the right dosage as a medicine, it does not harm diabetic patients. Weekly World News, a magazine in Canada , in its issue dated 17 January,1995 has given the following list of diseases that can be cured by honey and cinnamon as researched by western scientists:

HEART DISEASES:

Make a paste of honey and cinnamon powder, apply on bread, instead of jelly and jam, and eat it regularly for breakfast. It reduces the cholesterol in the arteries and saves the patient from heart attack. Also, those who have already had an attack, if they do this process daily, they are kept miles away from the next attack.. Regular use of the above process relieves loss of breath and strengthens the heart beat. In America and Canada , various nursing homes have treated patients successfully and have found that as you age, the arteries and veins lose their flexibility and get clogged; honey and cinnamon revitalize the arteries and veins.

ARTHRITIS:

Arthritis patients may take daily, morning and night, one cup of hot water with two spoons of honey and one small teaspoon of cinnamon powder. If taken regularly even chronic arthritis can be cured. In a recent research conducted at the Copenhagen University, it was found that when the doctors treated their patients with a mixture of one tablespoon Honey and half teaspoon Cinnamon powder before breakfast, they found that within a week, out of the 200 people so treated, practically 73 patients were totally relieved of pain, and within a month, mostly all the patients who could not walk or move around because of arthritis started walking without pain.

Date of Pubn. : 28.02.2014 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 Mar.2014
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2014-2016

विभूरसि प्रवाहणो वह्निरसि हव्यवाहनः।
वात्रोऽसि प्रचेतास्तुथोऽसि वि ववेदाः।।यजु.5/3।।
ऋषि – मधुच्छन्दा, देवता–अग्निः, छन्द–अनुष्टुप

हे प्रभो! आप (विभुः) आका ा की तरह सर्वत्र व्याप्त हैं। आप (प्रवाहणः) वायु के समान सभी जगह प्राप्त हो रहे हैं। हे स्वप्रका ा परमे वर आप (वह्निः असि) अग्नि के समान हैं। (हव्यवाहनः) आप आहुति में डाले जाने वाले पदार्थों को सूक्ष्मरूप में वहन करने वाले हैं। हे प्रभो! आप (वात्रः) ीघ्र व्याप्त होने वाले और (प्रचेता) प्रकृष्ट देने वाले हैं। हे सर्वज्ञाता आप (तुथः) सारे जगत में विद्यमान, सबके प्राप्तव्य और लाभ कराने वाले हैं।

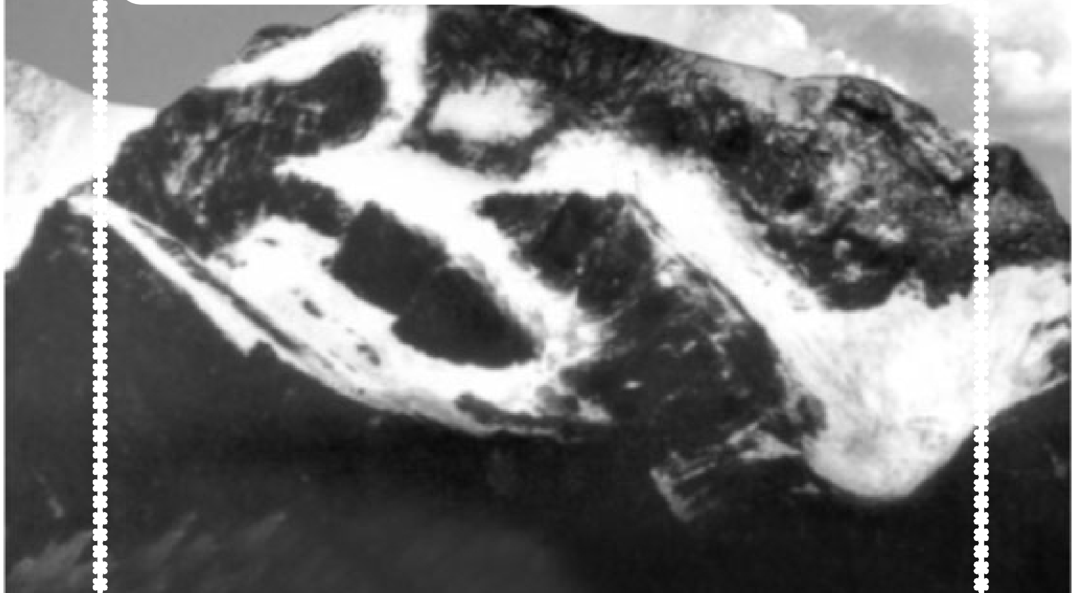

Oh Omnipresent God, You are All-pervading. By Your All-encompassing Might You manifest Yourself everywhere. Oh Self-effulgent God, You are conveyor of all saps necessary for life to all creatures. Oh Supreme Intelligence, You are quickly Pervasive. Oh Omniscient One, You are existent in the whole universe.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58